

# डॉ. क्रेग कीनर, मैथ्यू व्याख्यान 11, मैथ्यू 10-11

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह मैथ्यू की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 11 है, मैथ्यू 10-11।

मैथ्यू अध्याय 8 और 9 में, हम ऐसे समय पढ़ते हैं जहां यीशु बीमारी, आत्माओं और तूफानों पर अपना अधिकार प्रदर्शित करता है।

हमारे पास चमत्कारिक कहानियों के तीन सेट हैं, और प्रत्येक को यीशु के अधिकार के बारे में बात करके अलग किया गया है, लोगों को उसके अधिकार के प्रति समर्पित होने के लिए आमंत्रित किया गया है। खैर, तीन चमत्कारिक कहानियों के इस तीसरे सेट के बाद, हम यीशु के अधिकार की अभिव्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं क्योंकि वह फसल के लिए अधिक मजदूरों की बात करते हैं। यीशु की गतिविधि जो चल रही है उसे 9:35 में संक्षेपित किया गया है, जैसा कि 4:23 से 25 में पहाड़ी उपदेश से पहले संक्षेपित किया गया था, बीमारों को ठीक करना, राज्य की खुशखबरी के बारे में शिक्षा देना और उपदेश देना।

हम पद 36 में यीशु की प्रेरणा, उसकी करुणा के बारे में भी पढ़ते हैं। हे मेरे लोग, ये लोग बिना चरवाहे की भेड़ों के समान हैं। वह उनके प्रति प्यार का इजहार करते हैं।

अब वह भाषा परमेश्वर के लोगों के लिए पुराने नियम में कुछ अन्य समयों में प्रकट होती है, विशेष रूप से यहजेकेल 34 में, जहाँ भेड़ें बिना चरवाहे की भेड़ों की तरह होती हैं। वे तितर-बितर हो रहे हैं क्योंकि चरवाहे अपना काम नहीं कर रहे हैं। और इसलिए, भगवान स्वयं आते हैं और अपने लोगों की देखभाल करते हैं।

लेकिन श्लोक 37 में हम पढ़ते हैं कि मिशन को पूरा करने के लिए अधिक श्रमिकों की आवश्यकता है। काम को केवल जोड़ना नहीं बल्कि कई गुना बढ़ाना है। और यह एक समस्या है।

आप जानते हैं, यदि आप 20 दिनों में से प्रत्येक दिन केवल दो लोगों को मसीह की ओर आकर्षित करते हैं, तो ठीक है, आपने बहुत से लोगों को मसीह की ओर आकर्षित किया है। आपने 40 लोगों को मसीह में जीत लिया है। लेकिन यदि इसके बजाय आप उसे गुणा कर रहे होते, तो आपके पास बहुत बड़ी संख्याएँ होतीं।

खैर, यीशु, वह एक अवतारी इंसान के रूप में अपना सर्वश्रेष्ठ कर रहे हैं, लेकिन आप कितनी दूर तक जा सकते हैं इसकी कुछ सीमाएँ हैं। आप एक साथ दो स्थानों पर नहीं हो सकते। दुनिया की जरूरतें बहुत विशाल हैं।

इसलिए, वह फसल के लिए मजदूरों को बढ़ाना चाहता है। तो, पद 37, मिशन को पूरा करने के लिए और अधिक श्रमिकों की आवश्यकता है। श्लोक 38 में, शिष्यों को बाहर भेजने से पहले, वह कहते हैं, फसल के लिए मजदूरों के लिए प्रार्थना करो।

खैर, वो मजदूर कौन होंगे? ठीक है, जब आप अध्याय 10 पर पहुँचते हैं, तो आपको पता चलता है कि मजदूर वही हैं जो मजदूरों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं जब वह कहता है कि श्रम उनके किराये के योग्य है। तो यह वही ग्रीक शब्द है। तो अब हम मैथ्यू 10 से 12 को देखने जा रहे हैं।

मैं सभी मैथ्यू को समान मात्रा में विस्तार से नहीं कर रहा हूँ क्योंकि अन्यथा, यह पाठ्यक्रम बहुत, बहुत लंबा होता। लेकिन मैं मैथ्यू 10 से 12 तक कुछ विवरणों के साथ जा रहा हूँ लेकिन पूर्ण विवरण के साथ नहीं। खैर, मैथ्यू 9:35 से 38, जैसा कि हमने अभी देखा, इसके लिए व्यवस्था करता है।

और फिर जब वे फसल के लिए श्रमिकों के लिए प्रार्थना करते हैं, तो यीशु उन्हें बाहर भेजते हैं। वह शिष्यों को मिशन को आगे बढ़ाने के लिए अधिकृत करता है। और मिशन में राज्य की घोषणा करना शामिल है, लेकिन साथ ही, उन्हें आत्माओं पर अधिकार देना और चंगा करना भी शामिल है, पद 1। और वह 12 प्रेरितों को नियुक्त करता है।

प्रेरित शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है, इस पर बहस चल रही है। आज लोग कभी-कभी, मिसियोलॉजिस्ट और अन्य लोग अक्सर चर्च रोपण आदि के संदर्भ में प्रेरितिक मंत्रालय के बारे में बात करते हैं। और कुछ अन्य लोग कहते हैं, नहीं, प्रेरित केवल 12 थे।

खैर, सुसमाचार आमतौर पर इस शब्द को 12 पर लागू करते हैं, लेकिन वास्तव में पॉल के पत्रों में इस शब्द का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। इसलिए, इसका उपयोग एक से अधिक तरीकों से किया जा सकता है। और कुछ आधुनिक बहसों, क्या अब भी प्रेरित हो सकते हैं? यह इस पर निर्भर करता है कि आप इस शब्द का उपयोग कैसे कर रहे हैं।

जाहिर है, 12 हमारे साथ नहीं हैं, लेकिन लोगों को भेजे जाने और नियुक्त किए जाने के संदर्भ में, एपोस्टेलो वह क्रिया है जिससे जाहिर तौर पर एपोस्टोलोस बनता है। ऐसा नहीं कहा जाता था कि भेजे गए हर व्यक्ति को एपोस्टोलोस कहा जाता था, बल्कि विशेष रूप से नियुक्त दूत कहा जाता था। कुछ लोग इसे नियुक्त दूत शोलियाच की यहूदी अवधारणा से जोड़ते हैं।

रब्बी साहित्य में, यह एक विशेष प्रकार का कार्य है जहाँ दूत विवाह की व्यवस्था कर सकता है और सभी प्रकार के कार्य कर सकता है। उनके पास अपने कमीशन की सीमा तक अधिकार है। इसलिए, उन्हें जो कुछ भी करने के लिए नियुक्त किया गया है, वही अधिकार उनके पास है।

अन्य लोग कहते हैं, ठीक है, नहीं, रब्बी साहित्य बहुत देर हो चुकी है। हम शोलियाच के लिए उस पर निर्भर नहीं रह सकते। लेकिन उन्हें भेजने वाले व्यक्ति द्वारा अधिकृत एक कमीशन दूत का मूल विचार, आप इसे नीतिवचन में पहले से ही पाते हैं।

आप इसे पुराने नियम में पाते हैं। आप इसे ग्रीक दुनिया में पाते हैं। तो, जहाँ भी विशिष्ट भाषा आती है वहाँ सामान्य अवधारणा पहले से ही मौजूद है।

लेकिन शोलियाच का मतलब है भेजा हुआ, और एपोस्टोलोस का मतलब है भेजा हुआ। और विचार यूँ ही नहीं भेजा जाता है, बल्कि प्रेषक द्वारा कुछ चीजें करने के अधिकार के साथ अधिकृत किया जाता है। तो, वैसे भी, यीशु बारहों को भेजता है।

बारह क्यों? खैर, शायद इसलिए क्योंकि इस्राएल की बारह जनजातियाँ थीं। कुछ अन्य यहूदी लोगों ने कहा, अच्छा, इस्राएल की बारह जनजातियाँ, बारह नक्षत्र इत्यादि क्यों? उन्होंने इसे अन्य चीजों से जोड़ने की कोशिश की।

लेकिन पुराना नियम इसराइल के बारह जनजातियों की बात करता है। और यीशु इन बारहों को विशेष रूप से भेजता है। वह इस्राएल के बारह गोत्रों का विचार क्यों उत्पन्न करना चाहता है? मृत सागर स्कॉल भी बारह नेताओं के एक समूह के बारे में बात करते प्रतीत होते हैं क्योंकि उन्होंने खुद को एक नवीकरण आंदोलन के रूप में देखा, अवशेष के रूप में, इज़राइल के धर्मी अवशेष के रूप में, जहाँ से भगवान अंततः अपने लोगों को बहाल करेंगे।

तो, उसी तरह, यीशु इज़राइल के लिए अपने मिशन का प्रतीक या प्रतिनिधित्व करने के तरीके के रूप में बारह शिष्यों को चुन सकते हैं। अब इन शिष्यों के नाम. साइमन एक सामान्य नाम था.

शमौन ने पतरस को बुलाया। हमारे पास साइमन द ज़ीलॉट भी है। उन दोनों के ये नाम होने ही थे क्योंकि आप उन दोनों को सिर्फ साइमन नहीं कह सकते थे और उनके बीच अंतर करने का कोई तरीका नहीं था।

तो, आपके पास शमौन पतरस और शमौन उत्साही या शमौन जोशीला है। दूसरा सामान्य नाम जेम्स था। असल में, यह वास्तव में जेम्स नहीं था।

वह इसका अंग्रेजी संस्करण है। यह हिब्रू में याकोव, जैकब था, या ग्रीक में यह याकोबास था। हम अंग्रेजी में जैकब कहते हैं।

लेकिन नए नियम में, वे ऐसा दिखाने की कोशिश करते हैं जैसे कि उन्होंने किसी कारण से जैकब का अनुवाद जेम्स के रूप में किया हो। लेकिन यहां दो जैकब या दो जेम्स हैं। तो, इसमें उन्हें अलग करने के तरीके हैं।

यहूदा एक अन्य सामान्य नाम था। यहूदा, यहूदा की जनजाति, यहूदा के रूप में ग्रीक रूप में एक ही नाम है। तो, वास्तव में आपके शिष्यों में दो यहूदा थे।

एक था यहूदा इस्करियोती। अब इस्करियोती का क्या मतलब है? यह उसे दूसरे से कैसे अलग करता है? खैर, यह बहस का विषय है। लेकिन कुछ लोगों ने कहा है कि इसका मतलब यहूदा द डैगर मैन हो सकता है, जो सिसारी में से एक है।

मुझे लगता है कि संभवतः इसका मतलब इस्कैरियट, केरिओथ का आदमी है। वह केरिओथ नामक स्थान से था। हम उस नाम से एक जगह जानते हैं, उस नाम से एक गाँव जानते हैं।

तो, किसी भी स्थिति में, आपके पास इस नाम के एक से अधिक व्यक्ति थे। आपको सुसमाचार में बहुत सारी मरियमों मिलती हैं। ऐसा क्यों है कि हमारे पास गॉस्पेल और एक्ट्स के पहले भाग में बहुत सारी मैरी हैं? मैरी उस समय यहूदी धर्म में सबसे आम नाम था, उस समय यहूदिया और गलील में भी।

तो, यह आश्चर्य की बात नहीं है। यदि कोई इसे रोम या एथेंस में बना रहा था, तो संभावना है कि वे उन नामों के साथ नहीं आए होंगे जो यहूदिया और गलील में सबसे लोकप्रिय थे। लेकिन यह सबसे पुरानी परंपरा से चली आ रही है।

ये वास्तव में अवधि के सामान्य नाम थे, और इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है, अवधि और स्थान। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वे सुसमाचार परंपरा में इतने अधिक दिखाई देते हैं। यीशु अपने शिष्यों को एक मिशन, यीशु के एजेंटों के मिशन पर भेजता है।

प्रारंभिक मिशन केवल इज़राइल के लिए है, श्लोक 5 और 6। यह यीशु के मंत्रालय में अल्पकालिक प्राथमिकता थी। वह अध्याय 15 में कनानी स्त्री के साथ फिर से सामने आता है। मुझे इस्राएल के घर भेजा गया है।

वह कहता है, यह इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के लिये है। खैर, यह पुराने नियम, यिर्मयाह 50 और श्लोक 6, ईजेकील 34:12 से भी भाषा को उद्घाटित कर रहा है। यीशु पवित्रशास्त्र से परिपूर्ण हैं, और उनके मिशन को पवित्रशास्त्र के लोकाचार द्वारा आकार दिया गया है।

लेकिन यहां मुद्दा जातीयता से अधिक आंशिक रूप से भूगोल का है। उन्होंने कहा, गैरयहूदियों के रास्ते में मत जाओ। खैर, वे अन्यजातियों के शहरों की ओर जाने वाले रास्ते या सड़कें होंगी।

गलील उत्तर में अन्यजातियों के शहरों से घिरा हुआ था, इसलिए आप वास्तव में उस दिशा में गलील से बाहर नहीं जा सकते। मिशन को गलील तक सीमित करता है। यदि वे सामरियों के पास नहीं जा रहे हैं, तो वे अन्यजातियों के शहरों में भी नहीं जा रहे हैं।

खैर, उन्हें गलील में ही रहना होगा। अध्याय में यह एकमात्र आदेश है जिसे मैथ्यू अध्याय 28 में विशेष रूप से रद्द कर दिया गया है। दूसरी बात, हम मिशन में कुछ निरंतरता की उम्मीद कर सकते हैं, कि यह मिशन हमारे लिए एक मॉडल है, लेकिन यह भाग नहीं।

यह इसराइल के घर तक ही सीमित नहीं है। उनके संदेश के संदर्भ में, हम वहां निरंतरता देखेंगे। 3:2 में जॉन द बैपटिस्ट के साथ निरंतरता, 4:17 में यीशु के साथ निरंतरता। खैर, यहां भी शिष्यों को राज्य का संदेश आगे बढ़ाना है।

एक अन्य तत्व संकेत है, जो 10 और श्लोक 8 में प्रमाणीकरण के एक रूप का गठन करता है। खैर, इसमें निरंतरता है। यह 9.35 में यीशु के कार्य को आगे बढ़ाने का हिस्सा है। यीशु यह कर रहा था। वह राज्य का प्रचार और शिक्षा दे रहा था, और फिर वह बीमारों को चंगा करके और

राक्षसों को निकालकर परमेश्वर के शासन, परमेश्वर के अधिकार और परमेश्वर के राज्य का प्रदर्शन कर रहा था।

वह शिष्यों से भी ऐसा ही करने को कहते हैं। यह एक अभिव्यक्ति है, यह यीशु की करुणा की अभिव्यक्ति होनी चाहिए, जैसे 9:36 में, उसकी करुणा कि वह लोगों को ठीक करना चाहता था। हम यह भी देखते हैं कि यीशु के एजेंट केवल 10 श्लोक 8 से 10 में रहते हैं।

आप जानते हैं, आज कुछ मंडलियां हैं, और यह सच है, विशेष रूप से 1950 के दशक से, आज कुछ मंडलियां हैं जो उपचार को समृद्धि की शिक्षा से जोड़ती हैं, न कि इस रूप में कि जब आप बाहर जाते हैं तो भगवान आपकी जरूरतों को पूरा करते हैं, जो यहां सिखाया जाता है, लेकिन भगवान के रूप में आपको प्रचुर धन वगैरह का आशीर्वाद मिल रहा है, खासकर कुछ लोगों को जो इसका प्रचार करते हैं। खैर, वह एसोसिएशन केवल 1950 के दशक से ही अस्तित्व में है। अधिकांश चर्च इतिहास में, यह इसके विपरीत था, कि लोगों को उम्मीद थी कि जो लोग केवल जीवन जीते थे, वे ऐसे लोग होंगे जो ईश्वर के करीब चलेंगे और चमत्कार करेंगे।

अब, निःसंदेह, ईश्वर इसे किसी एक तरीके से करने तक ही सीमित नहीं है, लेकिन हम अक्सर इतिहास में ऐसा देखते हैं, निश्चित रूप से सेंट फ्रांसिस और सेंट एंथोनी को इसके लिए विशेष रूप से जाना जाता था, जैसा कि अथानासियस द्वारा दर्ज किया गया है। हमारे पास भी एक कहानी है, हो सकता है कि यह सच्ची कहानी न हो, लेकिन मध्ययुगीन काल से बताई गई एक कहानी है कि पोप, यह इतिहास के एक अधिक भ्रष्ट काल के दौरान था, पोप मध्ययुगीन कैथोलिक विद्वानों में से एक से कह रहे थे, ठीक है, अब यह नहीं कहा जा सकता, जैसा कि प्रेरितों के काम अध्याय 3 में पतरस और यूहन्ना ने कहा था, अब यह नहीं कहा जा सकता, चाँदी और सोना हमारे पास कुछ भी नहीं है। देखो, हमारे पास बहुत सारा चाँदी और सोना है, जिस पर विद्वान ने उत्तर दिया, न ही चर्च अभी भी कह सकता है कि उठो और चलो।

किसानों के पास अक्सर एक ही लबादा होता था। यह विशेष रूप से मिस्र में है, जहां हमारे पास इसके बारे में अधिक विवरण हैं। हो सकता है कि उनके पास यहूदिया और गलील की तुलना में अधिक हो, लेकिन कम से कम कई लोग इतने गरीब थे कि उनके पास केवल एक ही लबादा था।

कुछ लोगों ने इस यात्रा की तुलना केवल निंदकों से की है, लेकिन निंदकों के पास भी एक झोला था। यह निंदकों की तुलना में अधिक सरल है, जो हमारे यहां मैथ्यू अध्याय 10 में है। जोसेफस का कहना है कि एस्सेन्स ने यात्रा करते समय कोई प्रावधान नहीं लिया क्योंकि वे जहां भी जाते थे अन्य एस्सेन्स के आतिथ्य पर निर्भर रह सकते थे।

आतिथ्य एक ऐसी चीज़ थी जिस पर यहूदी लोग आम तौर पर निर्भर हो सकते थे यदि वे जहाँ यात्रा करते थे वहाँ अन्य यहूदी लोग भी होते थे। लेकिन हम एक अन्य उदाहरण भी देख सकते हैं, और यह वहीं बाइबिल में है। यह सबसे स्पष्ट उदाहरण है जो मैथ्यू के सभी श्रोताओं के लिए उपलब्ध था, और वह राष्ट्रीय धर्मत्याग के समय में इज़राइल के भविष्यवक्ताओं का उदाहरण था।

जंगल में एलिय्याह, एलीशा को भौतिक संपत्ति प्राप्त करने की कोशिश के लिए गेहजी को फटकारना पड़ा, जबकि उसे वास्तव में किसी और चीज़ पर अपना ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता थी। आम तौर पर जब लोग यात्रा करते थे, तो वे सुरक्षा के लिए एक कर्मचारी ले जाते थे। यह आपको संकरे पहाड़ी रास्तों पर कुछ स्थिरता भी दे सकता है।

लेकिन आप एक सांप को देखते हैं, तो आप उसे सिर पर काटना चाहते हैं। लेकिन यहां, आपको पूरी तरह से हल्के ढंग से यात्रा करनी होगी। अब, पॉल, जब वह यात्रा करता था, तो वह स्थानों पर रुकता था, और यदि उसे किसी स्थान पर लंबे समय तक रुकना होता था तो वह काम करता था, लेकिन उसने बहुत ही सरलता से यात्रा की।

इस मिशन को अंजाम देने के लिए उन्हें बेहद सादगी से रहना पड़ा। तो, यह जीवन और मिशन का विवरण है। पहला कुरिनथियों अध्याय 4, दूसरा कुरिनथियों अध्याय 11, मैं अक्सर भूखा, प्यासा, खराब कपड़े पहने हुए, इत्यादि रहा हूँ।

लोगों तक खुशखबरी पहुँचाने के लिए यह एक लागत है जो चुकाने लायक है। शिष्यों को हल्की यात्रा करनी पड़ी क्योंकि उन्होंने अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए ईश्वर पर भरोसा किया, अध्याय 10 श्लोक 10 और 11। प्राचीन काल में आतिथ्य सत्कार पर जोर था।

लोग आम तौर पर अपने चरित्र को प्रमाणित करने के लिए अनुशंसा पत्र लेकर आते हैं, इसलिए यह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो रात भर के लिए इन्हें रखकर आपको नींद में लूट लेगा। इसके अलावा, एक जोर भी है जो वास्तव में फिर से मिशन में आ गया है, खासकर 19वीं शताब्दी में। जॉर्ज मुलर, हडसन टेलर और अन्य लोगों ने मिशन के लिए ईश्वर के प्रावधान पर भरोसा करने पर बहुत जोर दिया।

दरअसल, वे इस हद तक चले गए कि वे किसी को बताना नहीं चाहते थे कि उनकी जरूरत क्या है। वे बस इसके लिए प्रार्थना करेंगे और भगवान को प्रदान करने देंगे। अब, कुछ प्रारंभिक विश्वास मिशनरी जो बाहर चले गए थे, उनके लिए बहुत कठिन समय था, और आज कई मिशनरों ने चीजों को सुव्यवस्थित कर दिया है, लेकिन भगवान पर निर्भर रहने का यह विचार, भगवान अंततः हमारा स्रोत है, और भगवान अक्सर लोगों के माध्यम से काम करते हैं, लेकिन हमें करना होगा भगवान पर निर्भर रहो।

मुझे अपने जीवन का एक समय याद है जब मैंने कोलकाता में एक बच्चे को 15 डॉलर प्रति माह पर भोजन और स्कूल उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता जताई थी। और उसके तुरंत बाद, लगभग एक या दो महीने तक ऐसा करने के बाद, मैंने अपनी आय के सभी साधन खो दिए। जब मैंने अपनी आय के सभी साधन खो दिए तो मेरी जेब में 10 डॉलर थे।

मैंने किराने के सामान पर \$9 खर्च किये। मेरे पास 1 डॉलर बचा था, और कुछ हफ्तों के बाद, मेरे लिए 15 डॉलर भेजने का समय आ गया था। और मेरे पास यह नहीं था, और मैं हताश था।

और मैं यह दावा नहीं कर सकता कि मैं जॉर्ज मुलर या हडसन टेलर जैसा महान आस्थावान व्यक्ति था क्योंकि मैं ऐसा नहीं था। मैं बस हताश था। और उस रात दरवाजे पर दस्तक हुई, और किसी ने मुझे 25 डॉलर देने के लिए प्रेरित किया।

भगवान ने मेरी हताश प्रार्थना का उत्तर दिया। अगले दिन मैंने भारत में बच्चे के लिए 15 डॉलर भेजे, और मेरे पास किराने का सामान खरीदने के लिए 11 डॉलर थे। और यहोवा हर महीने मेरी तृप्ति करता रहा।

और जिस दिन मैं ड्यूक यूनिवर्सिटी को फोन करने जा रहा था, यह लगभग वही समय अवधि थी, जिस दिन मैं ड्यूक यूनिवर्सिटी को फोन करने जा रहा था और उन्हें बता रहा था कि मैं आकर पीएचडी नहीं कर सकता। क्योंकि जब मैं उन्हें बुलाने के लिए तैयार हो रहा था तो मेरे पास केवल एक डॉलर था, मेरे पास कार्यक्रम करने के लिए पैसे नहीं थे। जिस दिन मैं उन्हें कॉल करने वाला था, उससे एक दिन पहले एक अप्रत्याशित स्रोत से पैसा उपलब्ध कराया गया था। अब, इसका मतलब यह नहीं है कि हर बार जब हम कुछ चाहते हैं, तो वह हमें मिल जाता है।

लेकिन यह मेरी कॉलिंग थी। ईश्वर जानता है। भगवान जानता था।

मुझे एक प्रोफेसर बनने के लिए पीएचडी की आवश्यकता थी जिसके लिए भगवान ने मुझे बुलाया था, और इसलिए उन्होंने मुझे ऐसा करने के लिए साधन प्रदान किए। जब मेरी पीएच.डी. समाप्त हो गया था, आप जानते हैं, भगवान ने मेरे लिए हर समय व्यवस्था की थी, और अंततः मैं तुरंत पढ़ाना शुरू करने की उम्मीद कर रहा था। लेकिन यह पहले से ही जून था, स्कूल सितंबर में शुरू हुआ, और मैं देख रहा था कि मेरे लिए कोई जगह उपलब्ध नहीं थी।

मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया था, मैं सभी प्रकार के स्थानों पर आवेदन कर रहा था, लेकिन मेरे पास कोई पद नहीं था। अंत में, मुझे लगता है कि यह अब जुलाई में था, यह रविवार की रात थी, और मुझे पता चला कि मुझे अपने शोध फाइलों को रखने के लिए पर्याप्त बड़े अपार्टमेंट के लिए कितने पैसे की आवश्यकता होगी क्योंकि मैंने वर्षों तक शोध किया था ताकि मैं इस बारे में बात कर सकूँ बाइबिल पृष्ठभूमि इत्यादि, मेरे पास यह सब इंडेक्स कार्ड में था, लेकिन मेरे पास हजारों इंडेक्स कार्ड थे। और जिस जगह पर मैं रह रहा था, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं किराए के लिए इतने पैसे कैसे जुटा पाऊंगा।

और मुझे पता चल गया कि मुझे कितना कुछ छोड़ने की जरूरत है, और मैं बस उसी पर जी रहा हूँ, मैंने बस इतना कहा, भगवान, मुझे नहीं लगता कि यह कैसे होने वाला है। और जब तक आप कोई चमत्कार नहीं करेंगे, मैं ऐसा नहीं कर पाऊंगा। और 24 घंटे से भी कम समय के बाद, इंटरवर्सिटी प्रेस ने मुझे वापस बुलाया।

उन्होंने कहा, ओह, यह पृष्ठभूमि टिप्पणी जिसे आपने लिखने की पेशकश की थी, हमने फैसला किया है कि हम चाहते हैं कि आप इसे पेश करें, हम चाहते हैं कि आप इसे करें, हम आपको एक अनुबंध की पेशकश करना चाहते हैं। यह डॉलर के लिए था। उन्होंने मुझे इस पर अग्रिम राशि दी।

यह उस डॉलर के बराबर था जो मैंने उस वर्ष जीने से पहले रात को तय किया था। यह मेरे महान विश्वास के कारण नहीं था, बल्कि भगवान उसकी बुलाहट की रक्षा कर रहे थे। यदि हम उसमें शामिल हैं जिसे करने के लिए भगवान ने हमें बुलाया है, तो भगवान ऐसा करने में हमारी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं।

इसलिए, हम कुछ ऐसा करने के बारे में बड़े सपने नहीं देखते हैं जिसे करने के लिए हमें नहीं बुलाया गया है, लेकिन अगर भगवान ने हमें ऐसा करने के लिए बुलाया है, तो भगवान इसे कर सकते हैं। और भगवान आमतौर पर हमें ऐसे काम करने के लिए बुलाते हैं जो हम अपनी ताकत से नहीं कर सकते। तो, हम उस पर निर्भर रहना सीखते हैं।

वह हमारा प्रदाता है। खैर, क्या अपनी रोज़ी रोटी के लिए काम करने के साथ-साथ प्रार्थना करना भी गलत है? खैर, पॉल ने यह किया। क्या समर्थन जुटाना गलत है? खैर, पॉल ने फिलिप्पी में चर्च से समर्थन स्वीकार किया।

तो, ये चीजें गलत नहीं हैं, लेकिन अंततः, हम अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए भगवान पर भरोसा करते हैं। हम श्लोक 12 से 15 में भी देखते हैं कि श्रोताओं का मूल्यांकन मसीह के दूतों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया से किया जाता है। इन लोगों के लिए सब कुछ दांव पर है कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं।

अब सामाजिक शिष्टाचार के लिए अभिवादन आवश्यक था। पहले किसे नमस्कार करना है इत्यादि। यदि कोई उच्च सामाजिक स्तर का था, तो आपको रास्ते में उनका स्वागत करने से पहले उनका अभिवादन करना होगा।

और अभिवादन सामान्यतः शालोम था। यह यहूदी लोगों का मौलिक अभिवादन था, जिसका अर्थ था कि शांति आपके साथ रहे। शैलम अलैकम।

शांति आपके साथ हो, लेकिन शांति सिर्फ इस अर्थ में नहीं कि आप युद्ध में न हों, बल्कि शांति इस अर्थ में कि आपका भला हो। आपके साथ सब कुछ अच्छा हो। यह प्रार्थना के भाव में था।

यह वैसा ही था जैसे अंग्रेजी में हम कहते हैं, ईश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे। आप उस व्यक्ति से बात कर रहे हैं, लेकिन परोक्ष रूप से आप अंततः इस व्यक्ति को आशीर्वाद देने के लिए भगवान का आह्वान कर रहे हैं। तो, यह एक प्रार्थना है, लेकिन यह व्यक्ति को आशीर्वाद की तरह संबोधित है, जैसे कि जब इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया था इत्यादि।

तो आप एक जगह पर जाएं, आप उन्हें यह आशीर्वाद दें। यदि वे आपके संदेश को अस्वीकार करते हैं, तो ठीक है, उन्हें आशीर्वाद नहीं मिलेगा। यदि उन्हें संदेश मिलता है, तो आशीर्वाद उनके साथ रहेगा।

यीशु आपके पैरों की धूल झाड़ने के बारे में भी बात करते हैं क्योंकि जब लोग, बहुत पवित्र यहूदी लोग पवित्र भूमि में प्रवेश करेंगे, तो वे यह दिखाने के लिए अपने पैरों की धूल झाड़ेंगे कि ठीक है,

यह अपवित्र था। अब मैं एक अधिक पवित्र स्थान में प्रवेश कर रहा हूँ। यीशु ने कहा कि तुम्हें गलील के इन कस्बों और गाँवों के साथ इसी तरह व्यवहार करना चाहिए।

यदि वे पश्चाताप नहीं करते हैं, तो आप उनके साथ अपवित्र व्यवहार करेंगे और यह उनके लिए सदोम से भी बदतर होगा। अध्याय 10, श्लोक 16 से 23 में, उत्पीड़न का वादा किया गया है। अब मार्क में इस सामग्री का कुछ भाग एक अलग स्थान पर दिखाई देता है।

यह मार्क 13 में अंत समय के कष्टों के बारे में बात करते हुए दिखाई देता है। लेकिन मैथ्यू के पास यह भी है क्योंकि यह मिशन, जैसा कि हम श्लोक 23 में जानेंगे, युग के अंत तक चलता रहता है। यीशु आयत 23 में कहते हैं, मनुष्य के पुत्र के आने से पहले तुम इस्राएल के सभी नगरों से नहीं गुजरे होगे।

तो, मिशन जारी है, इज़राइल और राष्ट्रों दोनों के लिए। और हम विरोध की उम्मीद कर सकते हैं। हर कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं देगा।

कुछ लोग करेंगे। कुछ स्थानों पर आप जाते हैं, यह परती ज़मीन को तोड़ने जैसा है। बीज बोने और प्रार्थना करने में लंबा समय लगता है और फिर चीजें घटित होने लगती हैं।

बाकी जगहें तो इतनी पकी हैं। मैंने ऐसी जगहों पर सेवा की है जहां फसल इतनी पक चुकी थी कि वह जमीन पर गिर रही थी क्योंकि हमारे पास फसल काटने के लिए पर्याप्त मजदूर नहीं थे। लेकिन यीशु अपने अनुयायियों को उत्पीड़न का सामना करने में सशक्त बनाने का वादा करता है, श्लोक 16 से 20 तक।

सबसे पहले, यीशु अपने अनुयायियों को भेड़ियों के बीच भेड़ के रूप में चित्रित करते हैं, जैसा कि हम सुसमाचार साझा करते हैं। हर कोई मित्रवत नहीं होगा। और हमें पता चला कि भेड़ें बेहद असहाय थीं।

तो, हमें पता चलता है कि यीशु हमें अपेक्षाकृत शक्तिहीन के रूप में चित्रित कर रहे हैं। हमारे कुछ शत्रु हमसे अधिक शक्तिशाली होंगे और हमें नुकसान पहुँचाएँगे। यहूदी ग्रंथों में कभी-कभी राष्ट्रों के बीच इज़राइल को शिकारियों के बीच भेड़ के रूप में चित्रित किया जाता है।

लेकिन यीशु हमें सिर्फ शिकारियों के बीच भेड़ के रूप में चित्रित नहीं करते हैं। वह विशेष रूप से कहते हैं कि भेड़ों को शिकारियों के बीच भेजा जाता है। यह हमारे मिशन का हिस्सा है।

हमें इसकी उम्मीद करनी होगी। हम यीशु के लिए शारीरिक कष्ट की उम्मीद कर सकते हैं। श्लोक 17 में, वह स्थानीय अदालतों में विरोध की बात करता है।

जोसेफस हमें बताते हैं कि स्थानीय अदालतों पर अक्सर लगभग सात स्थानीय बुजुर्गों का शासन होता था। कभी-कभी वे पुजारी होते थे, लेकिन जो भी स्थानीय समुदाय के बुजुर्ग होते थे। और आराधनालय सामुदायिक केंद्रों के रूप में कार्य करते थे।

तो वहीं पर स्थानीय अदालत भी लगती थी वगैरह वगैरह। यीशु वहां पीटे जाने की बात करते हैं। सभास्थलों में जिस तरह से पिटाई की जाती थी, अगर हम कुछ हद तक बाद के मिश्राइक ट्रैक्टेट, मकोट पर निर्भर हो सकते हैं, जिस तरह से पिटाई की जाती थी, आम तौर पर वे आपस में बुने हुए पेटी के साथ बछड़े के चमड़े का एक पट्टा का उपयोग करते थे।

और वे आपको पीठ पर 26 बार और छाती पर 13 बार मारेंगे, जितनी ज़ोर से स्ट्राइकर आपको मार सकता है। निंदा करने वाले व्यक्ति को पहले निर्वस्त्र किया जाता था और फिर दोनों तरफ एक खंभे से बांध दिया जाता था ताकि वे उन पर उस तरह से वार कर सकें। अब, हम यह भी जानते हैं कि यह वास्तव में इस अवधि में किया गया था, 39 कोड़े।

निःसंदेह, व्यवस्थाविवरण कहता है, किसी व्यक्ति को 40 कोड़ों से अधिक मत मारो। और इसलिए कानून के चारों ओर एक बाड़ के रूप में यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे 40 से आगे न जाएं, उन्होंने अधिकतम 39 किया। ठीक है, पॉल को वह 39 कोड़े पाँच बार मिले, वह कहता है, 2 कुरिन्थियों 11.24 में। एक चीज़ जो हमें दिखाती है वह है आराधनालय के साथ पॉल की निरंतर एकजुटता।

वह आराधनालय में सेवा करता रहा, हालाँकि कुछ सभास्थलों में उसे पसंद नहीं किया जाता था, और उन्होंने उसे पीटा। लेकिन हम यीशु की खातिर शारीरिक कष्ट की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन यहाँ यीशु जो कहते हैं वह गलील में प्रारंभिक मिशन से परे है क्योंकि वह सिर्फ आराधनालयों के बारे में बात नहीं करते हैं।

उनका कहना है कि ईश्वर अपने शिष्यों को अन्यजातियों के सामने बोलने का अधिकार देंगे। याद रखें, वे किसी भी तरह से अन्यजातियों के रास्ते पर नहीं जा रहे हैं। तो, यह मैथ्यू की यीशु की शिक्षाओं में अन्य स्थानों से अधिक रिकॉर्डिंग है, इसे यहां रख रहा है क्योंकि वह हमें मिशन के बारे में बता रहा है।

शिष्यों का मिशन हमारे मिशन के लिए एक मॉडल था क्योंकि हमें भी उम्मीद करनी चाहिए कि हमें मसीह के नाम के लिए कष्ट उठाना पड़ सकता है। अब, इसे भड़काओ मत. उत्सुकता से इसकी तलाश मत करो.

लेकिन जब ऐसा होता है तो हम खुश हो सकते हैं, हालांकि मैं स्वीकार करता हूँ कि जब मुझे सुसमाचार के लिए पीटा गया, तो मैं हमेशा खुश नहीं हुआ। दर्द हुआ। लेकिन फिर भी, परमेश्वर शिष्यों को अन्यजातियों के सामने बोलने का अधिकार देगा, पद 18-20।

वह राज्यपालों की बात करते हैं। खैर, यह सिर्फ पीलातुस नहीं है। वह सिर्फ यहूदिया का गवर्नर नहीं है।

यह यहूदिया से परे है और निश्चित रूप से गलील से परे है, जो किसी गवर्नर के अधीन नहीं था। यह एक चतुर्भुज हेरोदेस एंटीपास के अधीन था। हम यह भी देखते हैं कि उत्पीड़न कभी-कभी परिवारों को विभाजित कर देगा।

अब, वह एक विशेष रूप से भयानक समय माना जाता था, और पुराना नियम इसके बारे में बात करता है। यहूदी लोग मिश्रा सोथा में इसके बारे में पीड़ा के एक विशेष समय के रूप में बात करते हैं। पवित्र भूमि में भी, यीशु के लौटने तक उत्पीड़न जारी रहेगा, अध्याय 10 और पद 23।

अंत समय के बारे में एक ऐसी ही यहूदी कहावत थी। फिर हम 10:24-33 में सताए गए लोगों के लिए वादों पर आते हैं। हमें उत्पीड़न का सामना करना पड़ेगा, लेकिन वह हमें वादे भी देता है। और वह श्लोक 26 और 27 में हमें साहसपूर्वक प्रचार करने और शर्म से न डरने के लिए प्रोत्साहित करता है, क्योंकि भगवान अंततः हमें सही ठहराएंगे।

श्लोक 28 में, हमें उन लोगों से भी नहीं डरना चाहिए जो मौत की धमकी देते हैं, क्योंकि ईश्वर जानता है और ईश्वर हम पर नजर रखता है। यह तब तक नहीं होगा जब तक यह ईश्वर के हाथ में न हो। अध्याय 10, श्लोक 29-31.

ईश्वर की संप्रभुता पर भरोसा रखें, चाहे वह आपकी रक्षा करे या चाहे आप मर जाएँ। भगवान अभी भी वफादार है. भगवान अभी भी आपके साथ हैं.

वह कहता है, क्या दो गौरैया एक पैसे में नहीं बिकती? तुम्हारे पापा को गौरैया के बारे में पता है. वह गौरियों पर भी नजर रखता है। यहां जिस शब्द का अनुवाद सेंट किया गया है, वह श्लोक 29 में असारियन है।

वह एक दीनार के सोलहवें हिस्से से भी कम था। इसका मतलब यह है कि यह एक औसत कर्मचारी के लिए एक घंटे की मज़दूरी से भी कम है, शायद एक औसत कर्मचारी के लिए आधे घंटे की मज़दूरी है। यहूदी शिक्षक इस बात से सहमत थे कि ईश्वर हर पक्षी की मृत्यु को जानता है या उसका आदेश देता है।

और यहाँ, अगर भगवान को गौरैया के बारे में पता है, तो उसे हमारी कितनी परवाह है? श्लोक 30. तुम्हारे सिर का प्रत्येक बाल गिना हुआ है। यह सिर के प्रत्येक बाल के संदर्भ में पुराने नियम की एक सामान्य अभिव्यक्ति थी।

भगवान ने हमारे सिर पर हर बाल को गिना है, न केवल हममें से उनके लिए जिनके पास अधिक बाल नहीं हैं, बल्कि उनके लिए भी जिनके पास बहुत अधिक बाल हैं, उनके लिए भी उन्होंने हर बाल को गिना है। यह मनमौजी नियति या भाग्य के यूनानी दृष्टिकोण से काफी अलग है, जहां आप कभी नहीं जानते कि क्या होने वाला है, इसलिए बस इसकी आदत डाल लें। हम ऐसे भगवान की सेवा नहीं कर रहे हैं जिसके पास सिर्फ सनक है।

हम उस ईश्वर की सेवा कर रहे हैं जो हमसे प्यार करता है और हम जानते हैं कि उसके पास सब कुछ नियंत्रण में है और हम उस पर भरोसा कर सकते हैं। श्लोक 32 और 33. यदि हम उसे कबूल करते हैं, तो वह हमें कबूल करेगा।

यदि हम उसे अस्वीकार करते हैं, तो वह हमें अस्वीकार कर देगा। आप प्रेरितों के काम अध्याय 7 में स्टीफ़न के बारे में सोच सकते हैं, जहाँ स्टीफ़न पर पथराव किया जा रहा है और जो लोग

स्टीफन पर पथराव कर रहे हैं, वे अपने कपड़े उतार देते हैं, जो लोग कभी-कभी एथलेटिक गतिविधियों के लिए करते हैं, लेकिन आम तौर पर जब आप किसी को मार रहे होते हैं, तो आप उन्हें उतार देते हैं। वैसे, ल्यूक इसकी रिपोर्ट कर रहा है।

वह हमें उनके कपड़े उतारने के बारे में कुछ बता रहा है। शायद ल्यूक हमें यह बताने की कोशिश कर रहा है कि वास्तव में दोषी कौन है। आम तौर पर, जिस व्यक्ति की निंदा की गई थी, उसे यहूदी परंपरा के अनुसार, यह कहना चाहिए था, मेरी मृत्यु मेरे सभी पापों का प्रायश्चित्त कर देगी, लेकिन स्टीफन अपने पापों को स्वीकार नहीं करता है, वह उनके पापों को स्वीकार करता है।

हे प्रभु, इस पाप को दोष मत दो। लेकिन साथ ही, स्तिफनुस के बारे में उस अंश में, वह मनुष्य के पुत्र को पिता के सामने खड़ा देखता है। वह क्यों खड़ा है? वह फैसला सुनाने वाले न्यायाधीश या मुकदमे में गवाह की मुद्रा थी।

यीशु वहाँ न्याय करने के लिए है। जो लोग वास्तव में परमेश्वर की दृष्टि में मुकदमे में हैं, वे झूठे गवाह हैं और जो स्तिफनुस को गलत तरीके से पत्थरवाह कर रहे हैं। हमारे पास अपने विश्वास से समझौता करने से इनकार करने वाले शहीदों की यहूदी कहानियाँ हैं, और इसलिए इसे समझा जाएगा।

आपको अपने विश्वास से समझौता नहीं करना चाहिए। आम तौर पर वह ईश्वर में विश्वास था, ईश्वर में विश्वास को स्वीकार करना। यहां, इसका संबंध यीशु में विश्वास को स्वीकार करने से है, जिसे फिर से दिव्य के रूप में चित्रित किया जा रहा है।

10:34-39 में, हम देखते हैं कि यीशु के प्रति हमारी भक्ति की किसी अन्य चीज़ से प्रतिद्वंद्विता नहीं होनी चाहिए। यीशु हर चीज़ से पहले आता है। श्लोक 34-36 में हम परिवार के विरोध के बारे में पढ़ते हैं।

युवा जोड़े आमतौर पर पुरुष के परिवार के साथ रहते थे, यही कारण है कि हमने बहू और सास के बारे में पढ़ा क्योंकि यह सबसे सामान्य व्यवस्था थी जहां वे एक ही घर में एक साथ रहते थे। मीका 7.6 इसराइल की बहाली से पहले पारिवारिक विभाजन से पीड़ित समय की बात करता है। मिश्राह सोता 9.15, एक यहूदी परंपरा, उस विचार को विकसित करती है, जिसमें कहा गया है कि आप अंतिम क्लेश की अवधि के दौरान, परिवारों की महान पीड़ा के दौरान, अंत से पहले परिवार के सदस्यों पर भी भरोसा नहीं कर सकते हैं।

यीशु हमें श्लोक 37 में दिखाते हैं कि वह हमारे परिवार की स्वीकृति से अधिक मायने रखते हैं। ल्यूक का कहना है कि आपको यीशु की तुलना में अपने पिता और माता और परिवार के सदस्यों से नफरत करने की ज़रूरत है, लेकिन यह अतिशयोक्ति है, जाहिर है, क्योंकि आप उनसे प्यार करने में सक्षम नहीं होंगे। आप उनसे प्यार नहीं कर पाएंगे।

इसका मतलब है कि आप उनसे कम प्यार करते हैं। यीशु के प्रति हमारे प्रेम और यीशु के प्रति हमारी वफादारी की तुलना किसी भी चीज़ से नहीं की जानी चाहिए। लेकिन हम यीशु की अन्य

शिक्षाओं से जानते हैं, आप जानते हैं, आप शिक्षाओं को एक साथ कैसे रखते हैं, इसमें विरोधाभास है।

हम यीशु की अन्य शिक्षाओं से जानते हैं कि वह चाहता है कि हम अपने परिवारों से प्रेम करें, लेकिन यीशु के प्रति हमारे प्रेम की तुलना किसी भी चीज़ से नहीं की जा सकती। कुछ संतों ने कहा, ठीक है, तुम्हें पहले मुझसे प्रेम करना चाहिए क्योंकि मैं तुम्हारा गुरु हूँ। लेकिन तुलनात्मक रूप से किसी ने भी माता-पिता से नफरत करने की बात नहीं की।

केवल ईश्वर ने ही उस नियम की पुष्टि की, यहाँ तक कि अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से भी। लेकिन वह आगे कहता है, सिर्फ परिवार से ही नहीं, बल्कि तुम्हें मुझसे प्यार करना होगा, श्लोक 38 और 39, अपनी जान से भी ज्यादा। तुम्हें क्रूस उठाकर मेरे पीछे आना होगा।

खैर, क्रूस को उठाकर उसके पीछे चलने का क्या मतलब है? जब लोगों को क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला जाता था, तो उनके कपड़े उतार दिए जाते थे, उन्हें पीटा जाता था, और फिर उनके क्रॉस की क्षैतिज किरण को फाँसी की जगह तक ले जाया जाता था, आम तौर पर चिल्लाती और मज़ाक उड़ाती भीड़ के बीच में। जब आप अपनी मौत की राह पर आगे बढ़ रहे थे, अपनी ही फाँसी का औज़ार लेकर, शर्मनाक तरीके से नग्न, आपके आस-पास के लोगों द्वारा मज़ाक उड़ाया जा रहा था, यीशु ने कहा, मैं वहीं जा रहा हूँ। यदि आप मेरा अनुसरण करना चाहते हैं, तो आपको क्रूस तक मेरे पीछे चलना होगा।

कहानियाँ हमें दिखाती हैं कि उनमें हमारे प्रति धैर्य है। वह दयालु है। लेकिन अपनी शिक्षाओं में, वह स्तर नहीं गिराते।

हम जानते हैं कि हमसे क्या अपेक्षा की जाती है, और वह हमें ऐसा करने की शक्ति दे सकता है यदि हम उससे किसी भी अन्य चीज़ से अधिक प्यार करते हैं। अध्याय 10, श्लोक 40 से 42, मसीह के एजेंटों का सम्मान करते हुए। आप एक एजेंट के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, आप एक दूत के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, आप एक हेराल्ड के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, और उस समय आपने राजदूतों के साथ कैसा व्यवहार किया था, यह प्रेषक के व्यवहार को दर्शाता है।

यदि आपने किसी दूत का तिरस्कार किया, तो इसी प्रकार तुमने उसे भेजने वाले का भी तिरस्कार किया। यदि आपने दूत का सम्मान किया, तो ठीक है, आप उस व्यक्ति का सम्मान कर रहे थे जिसने उन्हें भेजा था। और हम निर्गमन और 1 शमूएल में भी देखते हैं, जहाँ वे मूसा के साथ क्या करते हैं, मूसा कहता है, तू ने मेरे साथ नहीं, परन्तु यहोवा के साथ किया है।

या 1 शमूएल 8 में, जहाँ परमेश्वर कहता है, उन्होंने तुझे नहीं, परन्तु मुझे, शमूएल को अस्वीकार किया है। मेहमाननवाज़ी। खैर, हमने इसके बारे में पहले मैथ्यू अध्याय 10 में पढ़ा था।

जब आप किसी शहर में जाएं तो आतिथ्य पर निर्भर रहें। किसी को तुम्हें अपने घर में ले जाने दो, और यदि वे तुम्हें ले जाएं तो वहीं रहो। यह उनके आतिथ्य पर निर्भर करता है।

अध्याय 10 और श्लोक 11. अब, आम तौर पर उस संस्कृति में, आतिथ्य सत्कार कभी-कभी तीन सप्ताह तक चल सकता है, सामान्यतः इससे अधिक नहीं। लेकिन उस संस्कृति में आतिथ्य सत्कार कुछ अन्य संस्कृतियों की तुलना में बड़ा था।

यदि आप संयुक्त राज्य अमेरिका गए हैं, या यदि आप संयुक्त राज्य अमेरिका से हैं, तो आप जानते हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका संस्कृतियों में सबसे अधिक मेहमाननवाज़ नहीं है। लेकिन वास्तव में, पहले के समय में, और अधिक ग्रामीण स्थानों में, अधिक आतिथ्य सत्कार होता था, क्योंकि आप लोगों को बेहतर तरीके से जानते हैं, आपकी संभावना कम होती है, आप कम सोचते हैं कि कोई आपको धोखा देगा, चाहे कुछ भी हो। लेकिन आतिथ्य कई संस्कृतियों में एक मूल्य है।

यह प्राचीन भूमध्यसागरीय दुनिया भर में एक मूल्य था। प्राचीन यहूदी धर्म में यह एक मूल्य था। और आप इस पर निर्भर हो सकते हैं।

आप इसे मैथ्यू अध्याय 25 में भी देखते हैं। खैर, उसी तरह से भगवान ने एलीशा की मेज़बान, सारपत की विधवा को पुरस्कृत किया, और यहां तक कि उसके बेटे को भी बड़ा किया, और भगवान ने एलीशा की मेज़बान, शुनेमिन महिला को पुरस्कृत किया, और उसके बेटे को बड़ा किया। वह कहता है, यदि वे तुम्हें ग्रहण करते हैं, तो वे मुझे भी ग्रहण करते हैं।

यदि वे आपको शिष्य के नाम पर एक कप ठंडा पानी भी देते हैं, तो उनके पास आपको देने के लिए बस इतना ही है। कभी-कभी किसानों को बस इतना ही देना पड़ता है। यदि वे आपको वह देते हैं जो वे कर सकते हैं, तो वे इनाम नहीं खोएंगे।

यह केवल विश्वास का कार्य था, जो कुछ वे कर सकते थे वह देना, सुसमाचार के दूतों का आतिथ्यपूर्वक स्वागत करना। क्योंकि जो लोग संदेश से असहमत थे उन्हें आम तौर पर संदेशवाहक प्राप्त नहीं होंगे। लेकिन जिन लोगों ने उनका आतिथ्यपूर्वक स्वागत किया, वे आम तौर पर वे लोग थे जिन्होंने उनके द्वारा लाए गए संदेश को अपनाया, और इसलिए दूतों को गले लगाया।

अध्याय 11 की शुरुआत ईश्वर के एक आदमी के संदेह से होती है। अध्याय 10 में हमने कुछ एजेंटों के बारे में पढ़ा जिन्हें अस्वीकार कर दिया गया था। खैर, हम उस व्यक्ति के पास आते हैं जिसे निश्चित रूप से अस्वीकार कर दिया गया था, जॉन द बैपटिस्ट।

उन्हें कई लोगों ने स्वीकार कर लिया, लेकिन अंततः उन्हें जेल में डाल दिया गया। और यहां जिस जेल की बात हो रही है, उसके बारे में हम जोसीफस से जानते हैं, वह पेरिया में माचेरस किला है। खैर, वह जॉर्डन के दूसरी तरफ है।

जॉन ने यीशु के कार्यों के बारे में सुना, और तभी उसे संदेह हुआ, अध्याय 11 और पद 3। अब यह हमें आश्चर्यचकित कर सकता है। जब जॉन पहली बार यीशु से मिला तो उसे कोई संदेह नहीं हुआ। जब उसने यीशु के कार्यों के बारे में सुना तो उसे संदेह हुआ।

क्या कार्य करता है? उपचार? झाड़-फूंक? तो, मैथ्यू 11, श्लोक 2 से 6 में, हम राज्य के संकेतों पर भरोसा करने के बारे में सीखते हैं। हम 11, 2, और 3 में यीशु से प्रश्न पूछने के बारे में पढ़ते हैं। उसने यीशु के कार्यों के बारे में सुना। तभी उन्होंने सवाल किया।

और वह भी निश्चित रूप से हमारे पास पश्चिमी संस्कृति में है। पश्चिमी शिक्षाविद यीशु के कार्यों पर सवाल उठाते हैं। हमने पहले डेविड फ्रेडरिक स्ट्रॉस के बारे में बात की थी और सोचा था कि ये चमत्कार किंवदंतियाँ हैं।

पूर्वधारणाएँ। डेविड ह्यूम ने कहा कि, ठीक है, वास्तव में चमत्कार नहीं हो सकते। और इसलिए डेविड ह्यूम की पूर्वधारणाओं का अनुसरण करते हुए, मैंने पहले डेविड ह्यूम के बारे में बात की थी।

कुछ लोग कह सकते हैं कि अब जबकि वह मर चुका है, उसकी आलोचना करना उचित नहीं है। आप ठीक कह रहे हैं। पूर्वधारणाएं मायने रखती हैं।

बहुत से लोगों ने ह्यूम की पूर्वकल्पनाओं पर विश्वास कर लिया है, और इसलिए वे चीजों को केवल संयोग, गलत निदान, या मनोदैहिक पुनर्प्राप्ति के रूप में समझाते हैं। और कुछ बातें संयोग होती हैं। कुछ चीज़ें गलत निदान वाली होती हैं, और कुछ चीज़ें मनोदैहिक होती हैं।

लेकिन ईश्वर चंगा भी करता है। और परमेश्वर उन कुछ अन्य चीज़ों के माध्यम से भी कार्य कर सकता है। मेरा मतलब है, भले ही यह एक मनोदैहिक बीमारी है, आपको इस बीमारी से छुटकारा पाना होगा।

तो, किसी भी मामले में, लेकिन कुछ संशयवादी दैवीय व्याख्या की बजाय किसी भी संभावित प्राकृतिक व्याख्या को प्राथमिकता देंगे। भले ही वे जो सबसे अच्छा कर सकते हैं वह यह कहना है, ठीक है, मेरे पास अब इसके लिए कोई स्पष्टीकरण नहीं है, लेकिन मुझे पता है कि एक होना चाहिए, और किसी के पास एक होना चाहिए, और किसी दिन एक होना चाहिए। इसका मूलतः तात्पर्य यह है कि, चाहे कुछ भी हो, मैं आप पर विश्वास नहीं करूँगा।

लेकिन यीशु प्रत्यक्षदर्शी गवाही की अपील करते हैं। वह कहता है, जॉन को बताओ कि तुम क्या देखते और सुनते हो। जॉन यीशु के साथ है।

उन्होंने देखा कि यीशु इनमें से कुछ काम कर रहा था। अब, डेविड ह्यूम ने जो कहा उसके संदर्भ में, डेविड ह्यूम ने कहा, ठीक है, विश्वास मत करो। आप गवाहों पर विश्वास नहीं कर सकते।

यही कारण है कि आज कुछ लोगों के पास किसी भी प्रकार के चमत्कार के घटित होने के प्रमाणों की संख्या असंभव रूप से ऊँची है। उन्होंने चमत्कारों के विरुद्ध एक समान मानवीय अनुभव को प्रस्तुत किया। यह वास्तव में एक समान नहीं है, लेकिन उन्होंने इसे प्रत्यक्षदर्शियों के विरुद्ध प्रस्तुत किया।

लेकिन जैसा कि हम जानते हैं, जैसा कि हमने पहले पाठ्यक्रम में बात की थी, हमारे पास लाखों लोग गवाह होने का दावा करते हैं, और कई लोग गैर-ईसाई पृष्ठभूमि से आते हैं जो गवाह होने का दावा करते हैं। तो, सबसे पहले, यीशु विभिन्न उपचारों का उल्लेख करते हैं। जॉन को बताएं कि आपने क्या देखा और सुना है।

उसे अंधेपन सहित इन विभिन्न उपचारों के बारे में बताएं। यह उनमें से एक है जिसका उन्होंने उल्लेख किया है। खैर, अध्याय 9, श्लोक 27 और 28 में, हमने दो अंधे लोगों को ठीक किया था।

मुझे अंधेपन के ठीक होने की बहुत सारी रिपोर्टें मिलीं। उनके बारे में पहले बात की थी. दिव्यांग पैदल चल रहे हैं.

खैर, अध्याय 9, श्लोक 2 से 6 में इसका एक उदाहरण था। और मैंने उसके कुछ उदाहरण भी दिए, जैसे लिसा लारियोस। कुष्ठ रोग शुद्ध होने के उदाहरण. मैंने पहले इसका उदाहरण नहीं दिया था, लेकिन मैथ्यू ने पहले ही हमें अध्याय 8, श्लोक 2 और 3 में इसका उदाहरण दिया है, जहां कोढ़ी यीशु के पास आता है, यदि आप चाहें, तो आप मुझे शुद्ध कर सकते हैं।

यीशु कहते हैं मैं शुद्ध हो जाऊंगा। और आज भी हमारे पास उसका लेखा-जोखा है, और मैं इस बिंदु पर एक विवरण दूंगा। असबरी सेमिनरी, एबी से मेरा एक छात्र पेरेनबराज ने बरनबास माल्टो नाम के किसी व्यक्ति के साथ काम किया, जो मूल रूप से बारी माल्टो था, और क्षेत्र में हर कोई यह कहानी जानता था।

बारी माल्टो एक जादूगर था, लेकिन वह कोढ़ी बन गया, और कोढ़ी हो जाने के कारण उसे उसके गाँव से बाहर निकाल दिया गया। एक दिन, दो लोग आए, और उन्होंने बारी माल्टो के लिए प्रार्थना की, तुरंत कुछ नहीं हुआ, लेकिन उस रात उसने एक सपना देखा, और सपने में, स्वर्गदूतों ने बारी के हाथों को छुआ, और वह जाग गया, उसने खुद को पूरी तरह से ठीक पाया, वह चला गया गाँव में, और पूरे गाँव ने मसीह को स्वीकार कर लिया। और इसलिए, निःसंदेह, यह उस गाँव में प्रसिद्ध है जहाँ मेरा छात्र काम करता था।

आंदोलन के आरंभिक दिनों में वहाँ विद्रोह आदि हुआ और आधा क्षेत्र परिवर्तित हो गया। लेकिन उन्होंने कहा कि चमत्कार केवल शुरुआती दिनों में ही हुए, बाद में शिक्षण की आवश्यकता पड़ी। लेकिन सुसमाचार की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए यह बहुत अच्छा था।

खैर, बहरापन, हमारे पास इसके कई उदाहरण हैं। मैंने पहले इसके कुछ उदाहरण दिए थे, मोज़ाम्बिक के उदाहरण इत्यादि। मुर्दों को फिर से जीवित किया जा रहा है, आज हमारे पास वह है।

आपके पास मैथ्यू अध्याय 9 में यह है। आज आपके पास इसके उदाहरण भी हैं। इसे आमतौर पर मनोदैहिक नहीं माना जाता है, और मैंने आपको इसके कई उदाहरण भी दिए हैं। तो, इन चमत्कारों का क्या मतलब है जो वह जॉन को कर रहा है? वह कहता है, तुमने ये चीज़ें देखी हैं, तुमने ये चीज़ें सुनी हैं, जॉन को इन चीज़ों के बारे में बताओ।

लेकिन यीशु ने जॉन को इन चीजों के बारे में बताने के लिए जिस भाषा का उपयोग किया है, उससे पता चलता है कि वह इन्हें सिर्फ यादृच्छिक रूप से सूचीबद्ध नहीं कर रहा है, बल्कि ये राज्य के विशिष्ट संकेत हैं। यहाँ यीशु के शब्द यशायाह के दो पाठों को उद्धृत करते हैं। एक है यशायाह 35, आयत 5 और 6। दूसरा है यशायाह 61, और आयत 1, गरीबों को सुनाए जाने वाले शुभ समाचार के बारे में।

और यह भाषा यशायाह के संदर्भ को भी उजागर करती है, जिसमें संपूर्ण सृष्टि की बहाली शामिल है, जिसके बारे में मैंने पहले बात की थी, लिली के साथ खेलने वाले रेगिस्तान, इत्यादि। यीशु के संकेत, यीशु के चमत्कार सिर्फ यादृच्छिक कार्य नहीं हैं, बल्कि वे परमेश्वर के राज्य का एक पूर्वस्वाद हैं। वे इस अर्थ में अस्थायी हैं कि भले ही हम मृतकों में से जीवित हो जाएं, देर-सबेर हम इस युग में फिर से मरेंगे।

लेकिन ये आने वाले साम्राज्य के संकेत हैं। चाहे आपको कोई विशेष चमत्कार मिले या नहीं, यह तथ्य कि ईश्वर किसी के लिए चमत्कार करता है, हम सभी के लिए एक प्रोत्साहन है। यह हम सभी को आने वाले संसार के बारे में परमेश्वर के वादे की याद दिलाता है।

जब कोई आह नहीं होगी, जब कोई रोना नहीं होगा, जब भगवान हमारी आंखों से हर आंसू पोंछ देंगे, और हम पूरी तरह से बहाल हो जाएंगे। यह फिर से राज्य के पहले से ही मौजूद होने का विचार है, अभी तक नहीं। राज्य इसकी परिणति नहीं है।

लेकिन यह हमें उस बात की ओर ले जाता है जो वह पद 6 में यूहन्ना से कहता है, यीशु ही ठोकर का कारण है। राज्य सबसे पहले टूटे हुए लोगों के लिए था। यीशु सबसे पहले टूटे हुए लोगों के बीच आये और हाशिये पर पड़े लोगों के बीच सेवा की।

वह कई लोगों के लिए एक बड़ी बाधा थी। और फिर, इसका मतलब यह है कि उसने हमारी बीमारियों को सहन किया। और वह क्रूस के मार्ग पर चल पड़ा।

लेकिन यीशु ने न केवल वह किया जो फरीसियों ने अपेक्षा की थी, न केवल वह जो सद्कियों ने अपेक्षा की थी, यीशु ने वह भी नहीं किया जो यूहन्ना ने अपेक्षा की थी। इस समय जॉन ने उसे क्यों नहीं पहचाना? यूहन्ना ने ठीक ही समझा कि यीशु पवित्र आत्मा और आग में बपतिस्मा देने वाला था। लेकिन आग कहाँ है? जॉन को समझ नहीं आया कि दो लोग आ रहे थे।

यह ऐसा है जैसे पॉल 1 कुरिन्थियों 13:9 में कहता है, हम आंशिक रूप से जानते हैं, हम आंशिक रूप से भविष्यवाणी करते हैं। स्वयं ईश्वर को छोड़कर हममें से किसी के पास संपूर्ण चित्र नहीं है। हमें बाकियों के साथ उस पर भरोसा करना होगा।'

जॉन ने यह नहीं देखा कि सब कुछ एक साथ कैसे फिट होगा। वह जानता था कि यीशु परमेश्वर का आदमी था। वह जानता था कि यीशु उसे सच बताएगा चाहे वह आने वाला हो या नहीं।

लेकिन जॉन जानना चाहता था क्योंकि जॉन वास्तव में एक ऐसे राज्य की आशा कर रहा था जो जॉन के मारे जाने से पहले आ सकता था। और जॉन की फाँसी बहुत जल्द होने वाली थी। यीशु ने उस तरह से काम नहीं किया जैसा लोगों ने अपेक्षा की थी।

यीशु कुछ लोगों के लिए ठोकर का कारण था। और राज्य के साथ भी ऐसा ही है। हम सुसमाचार पढ़ते हैं और हमें चमत्कारों से भी अधिक गहरा कुछ मिलता है।

फिर भी, चमत्कार राज्य का पूर्वस्वाद है। चमत्कार हमें कुछ शाश्वत दिखाते हैं भले ही इस जीवन में चमत्कार स्वयं शाश्वत नहीं हैं। लेकिन हम क्रूस में परमेश्वर के हृदय को और भी गहरे तरीके से देखते हैं।

क्योंकि क्रूस हमें वह कीमत दिखाता है जो उसने हमें चमत्कार और अन्य उपहार देने के लिए चुकाई। और क्रूस में, हम देखते हैं कि सबसे बड़ी पीड़ा के समय में, सबसे बड़ी पीड़ा के समय में, जब ऐसा लग रहा था कि कोई चमत्कार नहीं है, जब ऐसा लग रहा था कि सब कुछ बिखर गया है, जब यह न्याय का सबसे बड़ा उपहास जैसा लग रहा था कल्पना कीजिए, जहां अब तक के सबसे धर्मी व्यक्ति को क्रूस पर चढ़ा दिया गया था, एक अपराधी के रूप में निंदा की गई थी, भगवान अभी भी काम कर रहे थे। यहाँ तक कि अँधेरे के बीच में, यहाँ तक कि दुःख के बीच में भी, यहाँ तक कि मृत्यु के बीच में भी, परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अभी भी कार्य कर रहा था।

और इसका मतलब यह है कि चाहे कुछ भी हो हम उस पर भरोसा कर सकते हैं। जैसा कि बेट्सी टेन ब्रूम ने नाजी यातना शिविर में मरने से पहले अपनी बहन से कहा था, कोई भी गड्ढा इतना गहरा नहीं है कि भगवान उससे भी अधिक गहरा न हो। और यह सुसमाचार के संदेश का हिस्सा है।

दुख के बीच में भी, भगवान अभी भी काम पर हैं। परमेश्वर अपने वादे और अपने उद्देश्य पूरे करेगा। संकेत और चमत्कार उसी के वादे हैं, लेकिन क्रूस भी उसी का वादा है।

क्योंकि हम जानते हैं कि तीसरे दिन क्या हुआ। खैर, यीशु, जॉन के दूतों के जाने के बाद, वह जॉन द बैपटिस्ट के बारे में बात करता है। और वह कहता है, तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या आप हवा से हिलते हुए सरकण्डे को देखने के लिए निकले थे? खैर, यह पुराने नियम की अच्छी भाषा है।

एक सरकंडा कुछ कमजोर था। यह ऐसी चीज़ थी जिस पर आप उस समय निर्भर नहीं रह सकते थे जब आपको इसकी आवश्यकता थी। लेकिन इसके अलावा, ईख गलील के टेट्रार्क, हेरोदेस एंटीपस के सिक्कों पर प्रतीक था, जिसने जॉन को मार डाला था।

तो, हो सकता है कि वह विरोधाभास बना रहा हो। उसने कहा, तुम क्या देखने निकले थे? किसी ने शाही पोशाक पहनी है? ओह, अब हम जानते हैं कि वह हेरोदेस एंटीपस, टेट्रार्क, जो खुद को एक राजा की तरह समझता था, के साथ तुलना कर रहा है। उसने कहा, तुम्हें मालूम है, वे लोग राजाओं के महलों में हैं।

परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, नहीं, यूहन्ना एक भविष्यवक्ता था, और एक भविष्यवक्ता से भी बढ़कर। और यहीं वह मलाकी 3.1 को उद्धृत करता है। मार्क को इस कहावत को उद्धृत करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उसे यह मिल गया है, वह बस इस कविता को कहीं और उद्धृत करता है। लेकिन मलाकी 3.1. मैं अपने दूत को अपने सामने देखता हूँ।

और मलाकी, निस्संदेह, एलियाह के बारे में बात करता है, जो आएगा और प्रभु के दिन, यहोवा के दिन के लिए रास्ता तैयार करेगा। जॉन एलियाह जैसे व्यक्ति का वादा पूरा करता है। हमने इसे पहले मैथ्यू 3 में देखा था। इसलिए, मैथ्यू 11.14 में, मूल रूप से, यीशु कह रहे हैं कि जॉन एलिजा की तरह है।

जॉन एलिजा है। परन्तु राज्य यूहन्ना से भी बड़ा है। अब, यह जॉन के बारे में कुछ बुरा नहीं कह रहा है।

कुछ लोगों ने इसे जॉन का अपमान माना है। लेकिन प्राचीन तुलनाओं में, कभी-कभी वे किसी बुरी चीज़ की तुलना किसी अच्छी चीज़ से कर सकते थे। लेकिन कभी-कभी प्राचीन तुलनाओं में वे किसी अच्छी चीज़ और किसी बेहतर चीज़ की तुलना कर रहे होते थे।

और वे विशेष रूप से इस बात पर ज़ोर देने के लिए ऐसा करेंगे कि यह दूसरी चीज़ कितनी अच्छी थी। जॉन एक पैगम्बर से भी बढ़कर है। यूहन्ना उन से भी महान है जो पहले स्त्रियों से जन्मे थे।

लेकिन राज्य में जो लोग हैं उनका जन्म सिर्फ महिलाओं से नहीं हुआ है। राज्य वालों के पास कुछ बड़ा है। श्लोक 16 से 19 तक यीशु ने संस्कृति में श्रोताओं की तुलना बिगड़ल बच्चों से की है।

मैं इस पीढ़ी की तुलना किससे करूँ? वह भाषण का एक सामान्य यहूदी अलंकार था। मैं इस पीढ़ी की तुलना किससे करूँ? खैर, ये उन बच्चों की तरह हैं जो कहते हैं, अच्छा, हम बांसुरी बजा रहे हैं। तुम्हें नाचना चाहिए।

और अब हम शोक गीत गा रहे हैं, इसलिए तुम्हें शोक मनाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमारे साथ खेलें। और यदि आप हमारे साथ नहीं खेल रहे हैं, तो हम बहुत परेशान हैं।

और वे जब चाहें अपनी धुन बदल देंगे। वे ऐसे कार्य करते हैं मानो लोगों को उनके असंगत तरीके से खेलना चाहिए। खैर, जॉन अधिक तपस्वी तरीके से आये।

वह टिट्टियों, जंगली मधु और जल को छोड़, न तो कुछ खाता और न कुछ पीता आया। लोगों ने कहा कि उसमें भूत है। ठीक है, एक राक्षस होने पर, यदि आप कह रहे हैं कि एक भविष्यवक्ता के पास एक राक्षस है, तो आपने झूठे भविष्यवक्ताओं के बारे में यही कहा था।

तो, व्यवस्थाविवरण 13 में झूठे भविष्यवक्ताओं के लिए दंड क्या है? मौत। तो वे कह रहे हैं, जॉन मृत्यु-योग्य है। यीशु के बारे में क्या? यीशु खाते-पीते आये।

ओह, पेटू आदमी और शराबी। खैर, यह व्यवस्थाविवरण अध्याय 21 का संकेत है। एक विद्रोही पुत्र जो पेटू और शराबी है, उसके लिए दंड क्या है? मौत।

तो, वह कह रहा है, तुम बिगड़ल बच्चों की तरह हो। भगवान ने आपसे एक तरह से बात करने की कोशिश की, लेकिन आपने इसे नजरअंदाज कर दिया। भगवान आपसे दूसरे तरीके से बात करते हैं, आप विपरीत कारण से इसे अनदेखा कर देते हैं।

चाहे कुछ भी हो, आप ध्यान देने से इंकार कर देते हैं। और फिर वह पश्चाताप न करने वाले शहरों पर विलाप करना शुरू कर देता है। अब, ध्यान रखें कि पुराने नियम की तरह, कभी-कभी यह निर्णय सुनाने का एक काव्यात्मक तरीका था।

जब यशायाह मोआब के पतन पर विलाप कर रहा है या यिर्मयाह बेबीलोन के पतन पर विलाप कर रहा है, तो वे वास्तव में इसके बारे में दुखी नहीं हैं। लेकिन किसी भी मामले में, यीशु इसके बारे में दुखी हो सकते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि वह यरूशलेम पर कैसे रोते हैं और कहते हैं, मैं तुम्हें वैसे ही इकट्ठा करूंगा जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है। परन्तु अपश्चातापी नगरों में, वह कफरनहूम, बेथसैदा, और चोराज़िन पर ये विपत्तियाँ देता है, जिनके बारे में शायद गलील के बाहर किसी ने नहीं सुना था।

और वह कहता है कि इन गलील नगरों का न्याय सोर, सीदोन और सदोम से भी अधिक कठोरता से किया जाएगा। वह कहता है, हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया गया है? तुम्हें अधोलोक में, मृतकों के लोक में धकेल दिया जाएगा। अब, वह भाषा यशायाह अध्याय 14, श्लोक 11 और 12 को याद दिला रही है, जहां बेबीलोन के राजा ने एक देवता बनने की कोशिश की थी और मृतकों की आत्माएं उसका मजाक उड़ा रही थीं।

यह कफरनहूम के समान है, खैर, आप महान हो गए हैं। आपके पास बहुत सारे अवसर हैं, लेकिन आपको अधोलोक में धकेल दिया जाएगा क्योंकि आपका न्याय उस प्रकाश के अनुसार किया जाएगा जो आपको दिया गया है। यीशु श्लोक 25 से 30 में आगे बढ़ते हैं, और वह दिव्य ज्ञान की तरह बोलते हैं।

वह कहता है, ये बातें बुद्धिमानों से छिपाई गई हैं। अधिकांश फरीसियों को यह समझ नहीं आया। सद्दकियों को यह समझ नहीं आया।

अधिकतर पढ़े-लिखे लोगों को यह समझ नहीं आया। अब, ध्यान रखें, मैं शिक्षा के खिलाफ नहीं हूँ। मेरा मतलब है, आखिरकार, मैं एक प्रोफेसर हूँ।

मैं डॉक्टरेट छात्रों के साथ-साथ मास्टर छात्रों को भी पढ़ाता हूँ। तो, कृपया ध्यान रखें, मुझे लगता है कि शिक्षा अच्छी है। लेकिन नीतिवचन यह भी पूछता है, मूर्ख के हाथ में ज्ञान खरीदने की कीमत क्यों है? यह जानने के लिए कि बुद्धि के साथ क्या करना है, आपके पास पर्याप्त बुद्धि होनी चाहिए।

और मुझे ऐसा लगता है कि सबसे बुद्धिमानी की बात यह है कि सब कुछ ईश्वर को समर्पित कर दिया जाए। जब मैं नास्तिक था, तो मुझे लगता था कि मैं बहुत चतुर हूँ। और जब मुझे पता चला कि मैं उसके बारे में गलत था, मैं दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण चीज़ के बारे में गलत था, मुझे एहसास हुआ कि मेरी बुद्धि ने मुझे भटका दिया है।

क्योंकि यह प्रभु का भय है जो ज्ञान की शुरुआत है। और भगवान सब कुछ जानता है। ईश्वर के पास अनंत ज्ञान और अनंत बुद्धि है।

निश्चित रूप से मेरे लिए सबसे बुद्धिमानी का काम उस पर भरोसा करना है। और यदि कोई इससे सहमत नहीं है, तो उम्मीद है कि कम से कम वे इसका सम्मान कर सकते हैं, यह पहचानते हुए कि मेरे पास अनंत भगवान पर भरोसा करने का अच्छा कारण है। क्या यह सबसे बुद्धिमानी भरा तरीका नहीं है? यीशु कहते हैं कि ये बातें बुद्धिमानों से तो छिपी रहीं, परन्तु बालकों पर प्रगट की गईं।

याद रखें कि उन्होंने कैसे कहा था कि आपको मैथ्यू 18 में एक छोटे बच्चे की तरह बनना होगा? मैथ्यू अध्याय 6 और 7 को याद करें जहां वह हमारे पिता पर निर्भर होने की बात करता है। हम अध्याय 11 और श्लोक 27 में भी देखते हैं कि यीशु पिता के साथ एकमात्र मध्यस्थ हैं।

ये बातें केवल यीशु के माध्यम से और केवल यीशु के संबंध में ही प्रकट हो सकती हैं। तो, यह सिर्फ जॉन के गॉस्पेल में नहीं है, जॉन 14.6 में नहीं है, यह सिर्फ अधिनियम 4.12 में नहीं है। मैथ्यू 11 और ल्यूक अध्याय 10 में इस सामग्री में यीशु पिता के साथ एकमात्र मध्यस्थ हैं। इससे पहले, सिराच की पुस्तक में बेन सिराच कहते हैं, मेरे पास आओ, ज्ञान प्राप्त करो, ज्ञान का जूआ स्वीकार करो, वह महान आराम प्रदान करती है।

खैर, जूआ आम तौर पर जानवरों द्वारा खींचा जाता था या हो सकता है कि यदि आप बहुत गरीब किसान होते, तो आप भी जूआ खींच सकते थे। गुलामी के संबंध में योक का इस्तेमाल अक्सर नकारात्मक रूप से किया जाता था, लेकिन कभी-कभी इसका इस्तेमाल सकारात्मक रूप से भी किया जाता था। यहूदी शिक्षकों ने राज्य के जुए या टोरा के जुए के बारे में सकारात्मक तरीके से बात की।

लेकिन केवल ईश्वर ही इसके बारे में बात करेगा और टोरा या राज्य के बारे में कहेगा, यह मेरा जूआ है। या बुद्धि का जूआ भी, यह मेरा जूआ है, इसे अपने ऊपर ले लो। यहां यीशु को दिव्य के रूप में चित्रित किया जा रहा है।

और यीशु कहते हैं, मेरे पास आओ और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। जॉन के गॉस्पेल की तरह, वह अक्सर कहता है, मेरे पास आओ। यीशु विश्राम प्रदान करते हैं।

और यहां भविष्यवक्ता यिर्मयाह की पुस्तक के अध्याय 6 और श्लोक 16 की भाषा का उपयोग किया गया है। ईश्वर कहते हैं, सही मार्ग की ओर मुड़ो और अपनी आत्माओं के लिए विश्राम पाओ। यीशु कहते हैं, मेरे पास आओ और मैं तुम्हें आराम दूंगा, तुम्हारी आत्माओं को आराम दूंगा।

लेकिन इस अनुच्छेद में यीशु का विश्राम फरीसियों के विश्राम की परिभाषा से भिन्न है। हम देख सकते हैं कि अगले अध्याय की शुरुआत में यीशु का फरीसियों के साथ संघर्ष है। सब्त का पालन करने के सही तरीके के बारे में उनके पास एक ही विचार है।

और सब्त के विश्राम का क्या अर्थ है, इसके बारे में यीशु का विचार बहुत अलग है।

यह मैथ्यू की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 11 है, मैथ्यू 10-11।